भूख और झूठ

'खाना खायेंगे?'

'थैंक यू! मुझे भूख नहीं है।'

ह़म्ज़ा भाई! फिर तुम कहोगे कि तुम्हें तो हर बात में टांग अड़ाने की आ़दत है। बहरह़ाल तुम कुछ भी कहो, मैं तो अल्लाह की तौफ़ीक़ से इस्लाह़ का कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता।

मेरे भाई! क्या ही बेहतर होता अगर थैंक यू की जगह आप उन अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल करते जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आपको और मुझे सिखलाये हैं, 'जज़ाकल्लाहु ख़ै-र' (अल्लाह तआ़ला आपको इसकी बेहतरीन जज़ा दे)

देखो! कैसी मिठास है रसूलुल्लाह (ﷺ) के सिखलाये हुए इन मोतियों जैसे ख़ूबसूरत दुआ़इया अल्फ़ाज़ में; जबकि कितना रूखापन है, ग़ैरों की नक़्क़ाली और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के हुक्म से ऐराज़ करने में? फिर इन अल्फ़ाज़ की अदायगी से आपको अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त का अज्र भी मिलता और किसी मुसलमान भाई की ता'रीफ़ का हक़ भी अदा हो जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जिस शख़्स के साथ नेकी की जाये, फिर वो नेकी करने वाले के लिये ये दुआ करे 'जज़ाकल्लाहु ख़ै-र' तो उसने उसकी ता'रीफ़ का हक़ अदा कर दिया।'** (तिर्मिज़ी : 2035)

क्या बड़े लोगों का झूठ माफ़ है?

कुछ लोग कार में सफ़र कर रहे हैं। उनको एक शहर से दूसरे शहर जाना है। कार ने अभी आधा रास्ता भी पार नहीं किया है कि अगली सीट पर बैठे साहब के मोबाइल फ़ोन की घण्टी बजती है। वे अफ़रा-तफ़री में मोबाइल जेब से निकालकर ऊँची आवाज़ में कहते हैं, 'हाँ, मैं बस 15-20 मिनट में पहुँचने वाला हूँ।' जबकि हक़ीक़त ये है कि अभी दो घण्टे का सफ़र बाक़ी है।

ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह! इतना बड़ा झूठ बोलते हुए उस अल्लाह के बन्दे को ज़रा शर्म महसूस न हुई कि मेरे आस-पास छोटे-बड़े सभी सुन रहे हैं। ये मेरे बारे में क्या राय क़ायम करेंगे? ज़रा सोचिये अल्लाह न करे अभी कोई हादसा पेश आ जाये और उसकी मौत वाक़ेअ हो जाये तो इतने सारे गवाहों की मौजूदगी में उसका आख़िरी कलाम क्या होगा? झूठ! सफ़ेद झूठ! जिस आदमी से फ़ोन पर बात हुई वो कहेगा, कैसा झूठा आदमी था?'

एक जनाब एसी बस में कहीं जा रहे थे। शक्ल व सूरत से माशाअल्लाह पढ़े-लिखे आदमी। रास्ते में बड़े ख़ूबसूरत अंदाज़ में वअ़ज़ व नसीहत भी कर रहे थे। क़ुर्आन व हदीष के हवाले दे रहे थे। उनकी शख़्सियत बेहद मुताष्षिर करने वाली थी। मगर अफ़सोस! ज्यों ही बस उस शहर के क़रीब पहुँची, उनके मोबाइल की घण्टी बजी। सलाम के बाद वे फ़र्माने लगे, **'माफ़ी चाहता हूँ आज मेरा आपके शहर में आने का कोई प्रोग्राम नहीं है।'**

इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन! एक ही जुम्ले ने सारी वअ़ज़ व नसीहत और शख़्सियत को ख़राब करके रख